

## कारणता सिद्धान्त और ब्रेडले

डॉ. अनन्त कुमार यादव

एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष-दर्शनशास्त्र, इंस्टीट्यूट ऑफ ओरियन्टल फिलासफी, वृन्दावन, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

### सारांश

कारण-कार्य सिद्धांत दर्शन जगत का बहुतचर्चित और विवादास्पद सिद्धांत रहा है। इस सिद्धांत पर प्राच्य एवं पाश्चात्य दोनों दर्शनों में व्यापक विमर्श हुआ है। भारतीय दर्शन में जहाँ द्रव्यात्मक पक्ष पर विशेष बल दिया गया है वहीं पाश्चात्य दर्शन में संबंधात्मक पक्ष पर बल दिया गया है। आधुनिक दार्शनिक ह्यूम से लेकर ब्रेडले तक कारणता सिद्धांत के अंतर्गत कारण कार्य के बीच निहित संबंध की मीमांसा की गई है। ब्रेडले कारण कार्य संबंध का तार्किक परीक्षण करते हुये यह दिखाने का प्रयास किया है कि-कारण कार्य का संबंध आभास मात्र है, सत्य नहीं।

### मूल शब्द: ब्रेडले कारण, दर्शन जगत

कारणता बुद्धि की एक महत्वपूर्ण कोटि है। सामान्य जीवन और विज्ञान में तो इस कोटि का आधारभूत मानकर निष्कर्षों को निष्कर्षित किया ही जाता है। दर्शन में भी इसके आधार पर निष्कर्षों को प्राप्त किया जाता है। उदाहरणार्थ ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। परन्तु जब हम तत्वमीमांसीय दृष्टि से इसके स्वरूप को समझना चाहते हैं, तो हमें अनेक कठिनाइयों को सामना करना पड़ता है।

कारणता की कोटि वस्तुतः परिवर्तन के तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए स्वीकार की जाती है। हम देखते हैं कि इकाई 'अ' कालान्तर में दूसरा रूप ग्रहण कर लेती है, अर्थात् इकाई 'अ' 'ब' में परिवर्तित हो जाती है। हम इस परिवर्तित इकाई 'ब' का कारण 'अ' को मान लेते हैं इस प्रकार परिवर्तन के तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए ही हम 'कारणता' को स्वीकार करते हैं।

ब्रेडले द्वारा प्रस्तुत सन्दर्भ में दो निष्कर्षों को स्थापित करने की चेष्टा की गई है। प्रथम में तो कार्य-कारण सम्बन्ध की मूल असंगतियों को अनावृत किया गया है और दूसरे में काल की सातत्यता से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है।<sup>1</sup>

ब्रेडले कार्य-कारण सम्बन्ध का तार्किक परीक्षण करते हुए उससे सम्बन्धित अनेक कठिनाइयों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। सर्वप्रथम ब्रेडले, यह प्रश्न करते हैं कि क्या ये इकाइयाँ (कार्य और कारण) वस्तुतः एक ही हैं अथवा ये एक दूसरे से भिन्न हैं? प्रत्युत्तर में वे कहते हैं कि ये दोनों इकाइयाँ 'अ' (कारण) और 'ब' (कार्य), एक नहीं हो सकतीं क्योंकि यदि ये एक होती तो हम इन्हें भिन्न-भिन्न नामों से व्यक्त न करके एक ही नाम से व्यक्त करते। अन्य शब्दों में यदि ये एक ही होती तो इनके लिए हम 'कारण' और 'कार्य' जैसे दो शब्दों का प्रयोग न करते। 'ब' का कारण 'अ' है- इस कथन का तात्पर्य यह है कि कारण 'अ' कार्य 'ब' में परिवर्तित हो गया है यह परिवर्तन दोनों की स्थितियों की भिन्नता का द्योतक है और यदि ये भिन्न नहीं है तो फिर 'कारणता' का कोई अर्थ भी नहीं है। इस प्रश्न पर ब्रेडले अपने विचार यूँ प्रस्तुत करते हैं : "यदि ये भिन्न नहीं है, तो कारण-कार्य सम्बन्ध का कोई अस्तित्व ही नहीं है और इसकी स्वीकृति एक तमाशा मात्र है।<sup>2</sup> पर यदि कारण कार्य को हम भिन्न मानते हैं तो फिर हमारे सामने यह प्रश्न उठता है कि कोई भी इकाई क्यों अपने से भिन्न किसी दूसरी इकाई में परिवर्तित हो जाती है? तथ्यों के आधार पर हम सिर्फ इतना ही कह सकते हैं कि परिवर्तन होता है, पर यह परिवर्तन क्यों होता है, इसका कोई सन्तोषप्रद उत्तर ढूँढना हमारे लिए संभव नहीं है।<sup>3</sup>

### निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि यदि परिवर्तन के तथ्य को हम अस्वीकार करते हैं तो कारणता का प्रश्न ही नहीं उठता है और यदि हम उसे स्वीकार करते हैं तो परिवर्तन क्यों होता है इसे समझ नहीं पाते। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि यदि कारण और कार्य वस्तुतः एक ही हैं तो 'कारणता' का प्रश्न ही नहीं उठता और यदि ये भिन्न हैं तो इस भिन्नता का बौद्धिक स्तर पर स्पष्टीकरण हमारे लिए संभव नहीं है।

### स्पष्टीकरण के प्रयास में दो संभव विकल्पों की चर्चा

परिवर्तन विषयक उपर्युक्त निष्कर्ष को प्रस्तुत करने के पश्चात् ब्रेडले उस तथ्य के स्पष्टीकरण की कोशिश भी करते हैं और इस आशय से दो विकल्प प्रस्तुत करते हैं। प्रथम के अनुसार परिवर्तन का आधार स्वयं 'अ' है और दूसरे के अनुसार 'अ' से पृथक कोई दूसरी इकाई है जो 'अ' से संयुक्त होकर 'ब' के आविर्भाव को संभव बनाती है।

पहले विकल्प को प्रस्तुत करते हुए हम यह कह सकते हैं कि 'अ' स्वयं परिवर्तन को ले आने में सक्षम है परन्तु इस विकल्प को स्वीकार कर लेने पर भी समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है, क्योंकि हम यह नहीं समझ पाते कि क्यों कोई भी एक इकाई अपने भिन्न इकाई में अन्ततः परिवर्तित हो जाती है। अन्य शब्दों में इस विकल्प के अन्तर्गत परिवर्तन की तथ्यता को केवल स्वीकार किया गया है-परिवर्तन को नियंत्रित करने वाले कारण को प्रस्तुत करने की कोई भी कोशिश नहीं की गयी है।

पर दूसरे विकल्प को प्रस्तुत करते हुए यह कहा जा सकता है कि यद्यपि 'अ' 'ब' में परिवर्तित होने की सामर्थ्य नहीं रखता परन्तु जब वह किसी दूसरी इकाई, उदाहरणार्थ 'स' से संयुक्त होता है, तो वह 'ब' में परिवर्तित हो जाता है। इसी को प्रस्तुत करते हुए हम यूँ कह सकते हैं कि 'अ'+ 'स' ही वस्तुतः 'ब' का संयुक्त कारण है। परन्तु ब्रेडले कहते हैं कि इस विकल्प को स्वीकार कर लेने से स्थिति में कोई सुधार होने की आशा नहीं दिखाई देती बल्कि कठिनाइयाँ बढ़ जाती हैं।

### दो भिन्न इकाइयाँ किस प्रकार सम्बन्धित हो सकती हैं? <sup>4</sup>

संयुक्त कारण के प्रश्न पर विचार व्यक्त करते हुए ब्रेडले कहते हैं कि यदि 'अ' और 'स' वे दो इकाइयाँ हैं जो संयुक्त रूप से 'ब' का कारण हैं, तो फिर प्रश्न उठता है कि ये दोनों किस प्रकार सम्बद्ध हैं? जैसा कि हम जानते हैं-कि दो नितान्त पृथक इकाइयों

के बीच सम्बन्ध की युक्तियुक्तता को हम बुद्धि के स्तर पर स्पष्ट नहीं कर सकते। अतः 'अ' और 'स' के सम्बन्ध की समस्या का भी कोई समाधान हमारे लिए संभव नहीं है।

पुनः ब्रैडले कहते हैं यदि हम 'अ' और 'स' को 'ब' के आविर्भाव के संयुक्त कारण के रूप में मान लें और यह भी मान लें कि 'अ' और 'स' के सम्बन्ध की समस्या का भी हल संभव है, तो भी इस संयुक्त कारण की कल्पना में कठिनाइयाँ बनी रहेंगी। इनकी ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए वे कहते हैं कि कल्पना के अन्तर्गत दो विकल्प संभव हैं। पहला विकल्प तो यह है कि 'स' 'अ' को 'ब' को समुचित कारण बनाने के लिए सचमुच में प्रभावित करता है और दूसरा यह है कि 'स' 'अ' को वास्तव में प्रभावित नहीं करता बल्कि दोनों का सह-अस्तित्व ही 'ब' के आविर्भाव के लिए पर्याप्त हो जाता है।

प्रथम विकल्प को स्पष्ट करते हुए यह कहा जा सकता है कि 'स' जब 'अ' से संयुक्त होता है, तो उसे वास्तव में प्रभावित करता है और इसके फलस्वरूप 'अ' 'स' में परिवर्तित होकर 'ब' को उत्पन्न करता है। परन्तु इस प्रकार के प्रभाव की संभावना को स्वीकार करके हम ठीक वही पहुँच जाते हैं जहाँ से हमने इस चर्चा का आरम्भ किया था। अन्य शब्दों में इस स्वीकृति के साथ कि 'स' यथार्थ में 'अ' को प्रभावित करता है, कारणता की समस्या अपने मूल रूप में पुनः हमारे समक्ष उपस्थित हो जाती है, क्योंकि कारणता की मूल समस्या तो यही थी कि क्या सचमुच में कोई भी इकाई अपने आप अपने से भिन्न किसी इकाई में परिवर्तित हो सकती है? यही नहीं, ब्रैडले कहते हैं कि 'अ' वास्तव में 'स' की मध्यस्थता से 'ब' में परिवर्तित हो सके। इसके लिए हमें 'अ' और 'स' के बीच किसी और इकाई उदाहरणार्थ 'द' की मध्यस्थता को स्वीकार करना पड़ेगा और इस प्रकार अनिवार्यतः हमारे चिन्तन में अनावस्था दोष आ जायेगा। इसी तथ्य को ब्रैडले अपने शब्दों में इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं "यदि एक कारण कारण होने के लिए अन्य कारण की अपेक्षा करता है तो यह क्रम अशेष रूप से चलता रहता है"।<sup>15</sup> अतः हम इस बात को स्वीकार नहीं कर सकते कि 'स' 'अ' को सचमुच प्रभावित करता है पुनः यदि द्वितीय विकल्प के अनुसार हम यह माने की 'स' 'अ' को प्रभावित नहीं करता वरन् 'स' और 'अ' का सह अस्तित्व ही 'ब' के आविर्भाव का कारण है तो इस स्वीकृति से सम्बन्धित भी कठिनाइयाँ हैं। प्रश्न स्वाभाविक है कि तब 'अ' और 'स' के सह अस्तित्व का क्या कारण है? 'अ' और 'स' क्या एक दुसरे के संसर्ग में आते हैं? और यह संसर्ग क्यों 'ब' के आविर्भाव का कारण बन जाता है? इन प्रश्नों का कोई उचित उत्तर हमें मिलता दिखाई नहीं देता।

इसप्रकार हम देखते हैं कि 'ब' के आविर्भाव के लिये किसी बाह्य इकाई 'स' की कल्पना कठिनाइयाँ ही उत्पन्न करती है और इससे हमें कोई तार्किक तथा संतोषजनक हल भी प्राप्त नहीं होता है।

इसी विकल्प से सम्बन्धित विचार प्रस्तुत करते हुये ब्रैडले कहते हैं इस 'संयोजन' के बारे में हम दो संभावनाओं की कल्पना कर सकते हैं। पहली के अनुसार हम यह कह सकते हैं कि यह हमारे सोचने का ही एक तरीका है और तथ्यों से उसका कोई भी सम्बन्ध नहीं है या फिर हम यह भी कह सकते हैं कि यह एक ऐसा कामचलाऊ तरीका है, जिसका प्रयोग व्यावहारिक कारणों से ही किया जाता है।<sup>16</sup> जबकि दूसरी संभावना के अनुसार हम यह कह सकते हैं कि यह हमारे लिये सोचने के उस तरीके को प्रस्तुत करता है, जो तथ्यों की रचना से सम्बन्धित है। यदि ऐसा है, तो हमें उसके औचित्य को भी प्रस्तुत करना चाहिए। पर इस औचित्य को प्रस्तुत करते हुए हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि वह संगतिपूर्ण है। पर क्योंकि हम इसे अस्वीकार ही इसलिए करते हैं कि वह संगतिपूर्ण नहीं है इसलिए स्पष्ट है कि वह हमारे सोचने का तरीका नहीं है।

पुनः ब्रैडले कहते हैं कि यदि कार्य की ओर से इसी प्रश्न पर विचार किया जाय तो स्पष्ट है कठिनाइयाँ आयेंगी ही। अतएव निष्कर्ष स्पष्ट है कि इतनी विसंगतियों से युक्त विकल्प किस प्रकार बुद्धि को संतोष प्रदान करेगा? अतएव यह आभास ही हो सकता है सत् नहीं।<sup>17</sup> ध्यातव्य है कि उपर्युक्त निष्कर्ष पर विचार करते हुए हम यह कह सकते हैं कि सम्भवतः सारी कठिनाइयाँ इस कारण हैं कि हम किसी भी कार्य विशेष के लिए किसी एक 'कारण' को स्वीकार करते हैं। फलस्वरूप जो कारण प्रस्तुत किया जाता है, वह कार्य को उत्पन्न करने में सक्षम नहीं होता और अपने में तथाकथित सामर्थ्य उत्पन्न करने के लिए उसे किसी अन्य की अपेक्षा करनी पड़ती है। अन्य शब्दों में, हम यह देख चुके हैं कि 'ब' के आविर्भाव के लिये केवल 'अ' पर्याप्त नहीं है और यदि 'अ+स' को कारण मान लिया जाय तो फिर कारण के स्पष्टीकरण के लिए 'द' की स्वीकृति अनिवार्य हो जाती है और इस प्रकार हमारे चिन्तन में अनिवार्यतः अनावस्था दोष आ जाता है।

पर ब्रैडले कहते हैं इससे यह निष्कर्ष भी निकल सकता है कि किसी भी घटना को कार्य रूप में समझने के लिए हमें पूर्ववर्ती घटनाओं को पृथक-पृथक नहीं अपितु उन्हें उनके समन्वित रूप में ही लेना चाहिए। अतएव पूर्ववर्ती घटनाओं की सम्पूर्ण श्रृंखला को यदि हम कारण मान लें तो शायद ये कठिनाइयाँ दूर हो जायें और समस्या का निवारण हो जाय। अन्य शब्दों में यदि हम 'अ' को सम्पूर्ण संदर्भ में स्वीकार कर लें भले ही, यह व्यावहारिक दृष्टि से अनावश्यक हो, <sup>8</sup> तो संभव है कि कारण रूप में 'ब' के साथ उसकी सहज सम्बद्धता सिद्ध हो सके।<sup>9</sup>

परन्तु ब्रैडले कहते हैं कि इस विकल्प के अन्तर्गत जिस समग्र कारण को स्वीकार किया गया है उसको व्यावहारिक स्तर पर प्राप्त करना बड़ा कठिन है क्योंकि किसी भी संभव बिन्दु पर तथाकथित संपूर्णता को ग्रहण करना असम्भव है। प्रत्येक इस प्रकार की सम्पूर्ण इकाई, जो पूर्ववर्ती घटनाओं को उनकी समग्रता में प्रस्तुत करती है, स्वयं एक अपर्याप्त इकाई ही है और अपनी अपर्याप्तता को दूर करने के लिए अन्य किसी पूर्ववर्ती कड़ी की अपेक्षा करती है। अन्य शब्दों में, इसप्रकार की कल्पित सभी इकाइयाँ — उन्हें कितना भी व्यापक हम क्यों न कर लें, सीमित और अपर्याप्त ही रहेंगी और इनके आधार पर कार्य का स्पष्टीकरण किसी प्रकार संभव नहीं होगा और यदि हम यह मान ले कि समग्र कारण को प्राप्त करना हमारे लिए संभव है तो भी कारण कारण है और कार्य कार्य है। कारण और कार्य दो भिन्न इकाइयाँ हैं जैसा कि पूर्व पृष्ठों में स्पष्ट किया जा चुका है उनकी अन्तर्सम्बद्धता को प्रज्ञा के स्तर पर स्पष्ट करना हमारे लिए संभव नहीं होगा।<sup>10</sup>

### काल की सातत्यता से सम्बन्धित विचार

अन्त में एक और तरह से ब्रैडले इस समस्या पर विचार करते हैं। वे कहते हैं कि किसी भी इकाई के दूसरी इकाई में परिवर्तित होने के लिए यह आवश्यक है कि परिवर्तन की निरन्तरता यानी उसकी सातत्यता बनी रहे।<sup>11</sup> यदि कारण 'अ' कार्य 'ब' में परिवर्तित हो रहा है तो यह परिवर्तन लगातार होना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि कोई वस्तु कुछ काल तक अपरिवर्तित बनी रहे और फिर सहसा परिवर्तित होकर कार्य का रूप धारण कर ले। ब्रैडले का यहाँ पर परोक्ष रूप से स्वीकृत तर्क यह है कि यदि कोई वस्तु कुछ क्षण तक भी अपरिवर्तित रह सकी है, तो वह आगे भी अपरिवर्तित रह सकती है। अतएव कारण को कार्यरूप में परिवर्तित होने के लिए निरन्तर परिवर्तित होना चाहिए, पर ऐसा संभव नहीं है।

हम देखते हैं कि कारण बिन्दु के रूप में 'अ' और कार्य बिन्दु रूप में 'ब' के बीच अनगिनत बिन्दु हैं। 'अ' को 'ब' तक पहुँचने के लिए 'य' 'र' 'ल' 'क' 'ख' 'ग' आदि अनन्त बिन्दुओं से गुजरना

पड़ेगा। परन्तु ये बिन्दु तो गति के ठहराव का द्योतक है और इन स्थिर बिन्दुओं के माध्यम से गति का स्पष्टीकरण कैसे संभव है ? प्रश्न उठता है कि जो गतिहीन है वे सहसा गतिशील कैसे हो सकते हैं ? अन्य शब्दों में, ये गतिहीन बिन्दु क्यों और कैसे अपने स्वरूप का परिवर्तन करके गतिशील हो जाते हैं ये हमारी समझ में नहीं आता और फिर प्रश्न उठता है कि ये मध्यस्थ बिन्दु यदि एक क्षण के लिए भी गतिहीन रह सकते हैं तो वे सदा के लिए गतिहीन क्यों नहीं रह सकते ?

इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त कठिनाईयों के कारण बुद्धि परिवर्तन यानी कारणता की समस्या का समाधान नहीं कर पाती। बुद्धि के पास इसका कोई संतोषजनक उत्तर नहीं है कि क्यों एक इकाई अपने से भिन्न रूप में परिवर्तित हो जाती है, और जो बुद्धि को संतोष न प्रदान कर सके वह ब्रेडल की शब्दावली में 'आभास' हो सकता है। अतएव कारण-कार्य का सम्बन्ध आभास मात्र है, सत् नहीं।<sup>12</sup> इसप्रकार स्पष्ट है कि कारणता को हम जिस रूप में प्रस्तुत करते हैं, वह भले ही व्यावहारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं उपयुक्त हो परन्तु तत्वमीमांसीय दृष्टि से अनुपयुक्त ही है।<sup>13</sup>

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ब्रेडले का दर्शन – डॉ० लक्ष्मी सक्सेना, उ०प्र० हिन्दी संस्थान लखनऊ, पृष्ठ – 77
2. If it is not different, then causation does not exist and its assertion is a force, Appearance and reality F.H. Bradley-p-46
3. “theremust’ in other words, be a reason for the change but the endeavour to find a satisfactory reason is fruitless”, Appearance and reality F.H. Bradley-p-46-
4. ब्रेडले का दर्शन – डा लक्ष्मी सक्सेना, पृ-79
5. if the cause is to be cause, there is some reason for its being thus and so on indefinitely, Appearance and reality F.H. Bradley -p-47
6. ibid-p-47
7. “A make shift and merely appearance” Appearance and reality F.H. Bradley -p-48
8. “The entire background has to be taken in, although it may be irrelevant practically”  
इसी सन्दर्भ में एकाकी कारण एवं स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए ब्रेडले कहते हैं कि ये अपनी जगह समुचित अपकर्षण हैं। ब्रेडले का दर्शन – डॉ० लक्ष्मी सक्सेना पेज- 82  
“Legitimate abstractions and they contain enough truth to be partially admissible. But it will be added that. If we require truth in any strict sence, we must countain ourselves to one entire state of the world. This whole will be the csuse and the next entire state.”
9. For each such state has tendency to trancend itself. “backsuch wards ion regress without limit.....“The relation and qualities of which it is composed will refer themselves, even if you keep to the moment for ever away from themselves into endless dissipation.” Appearance and reality F.H. Bradley, 48-49.
10. “The sequence of a difference still remains entirely irrational.” Ibid-P-47
11. We have merely a fresh instance of compromise without principal another case of pure makeshift. Appearance and reality F.H. Bradley, 46.
12. A.C Ewing: “ The fundamental question of Philosophy, Page 160-172
13. स्मकालीन पाश्चात्य दर्शन – डॉ० लक्ष्मी सक्सेना, उ०प्र० हिन्दी संस्थान लखनऊ

14. स्मकालीन पाश्चात्य दर्शन – प्रो० नित्यानन्द मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
15. दर्शन के सौ वर्ष – जान पैसमोर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।